E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2025; 7(7): 169-175
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 12-05-2025
Accepted: 15-06-2025

देवेंद्र कुमार
शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
देवेंद्र कुमार
शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

हिन्द महासागर क्षेत्र में चुनौतियां और संभावनाएं: भारत-श्रीलंका के संदर्भ में

देवेंद्र कुमार

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i7c.602

सारांश
यह शोध पत्र हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत-श्रीलंका संबंधों की चुनौतियों और संभावनाओं का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। हिन्द महासागर क्षेत्र, जो वैश्विक व्यापार और सामरिक स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, भारत और श्रीलंका के लिए आर्थिक और सामरिक दृष्टिकोण से विशेष महत्व रखता है। इस शोध में दोनों देशों के आर्थिक संबंधों, सामरिक साझेदारी, और भू-राजनीतिक परिदृश्यों का अध्ययन किया गया है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत श्रीलंका में बड़े पैमाने पर निवेश ने भारत के लिए नई चुनौतियां उत्पन्न की हैं। हंबनटोटा बंदरगाह और अन्य परियोजनाओं पर चीन के नियंत्रण ने इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन पर प्रभाव डाला है। इसके बावजूद, भारत ने श्रीलंका के साथ व्यापार, बुनियादी ढांचे, और समुद्री सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दिया है। इस शोध में व्यापार असंतुलन, श्रीलंका के बाहरी ऋण, और चीन की बढ़ती उपस्थिति जैसी चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा, ब्लू इकॉनमी, और क्षेत्रीय व्यापार संपर्कता जैसे क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विस्तृत आंकड़ों और सांख्यिकीय विश्लेषणों के माध्यम से, यह अध्ययन भारत-श्रीलंका संबंधों के क्षेत्रीय प्रभाव को समझने और हिन्द महासागर क्षेत्र की स्थिरता और विकास में उनके योगदान का आकलन करने का प्रयास करता है।

कुटशब्द: **हिन्द महासागर क्षेत्र, भारत-श्रीलंका संबंध, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक एकीकरण, भू-राजनीतिक रणनीति**

प्रस्तावना

हिन्द महासागर क्षेत्र (Indian Ocean Region, IOR) विश्व राजनीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह क्षेत्र अपनी भौगोलिक स्थिति, व्यापारिक मार्गों, और ऊर्जा आपूर्ति के कारण अत्यधिक सामरिक और आर्थिक महत्व रखता है। दुनिया के लगभग 80% तेल व्यापार और 50% कंटेनर परिवहन का संचालन हिन्द महासागर क्षेत्र के माध्यम से होता है। इस क्षेत्र में स्थित प्रमुख समुद्री मार्ग,

जैसे मलक्का जलडमरूमध्य, वैश्विक व्यापार के लिए महत्वपूर्ण हैं और एशिया, अफ्रीका और यूरोप को आपस में जोड़ते हैं [1]।

भारत के लिए हिन्द महासागर क्षेत्र की विशेष महत्ता है, क्योंकि इसके तटीय क्षेत्रों और द्वीपों की सुरक्षा, आर्थिक समृद्धि, और ऊर्जा आपूर्ति इसी पर निर्भर है। भारत का समुद्री व्यापार, जिसमें कच्चे तेल और अन्य ऊर्जा संसाधनों का आयात शामिल है, हिन्द महासागर के माध्यम से संचालित होता है। भारत की सामरिक और रक्षा रणनीतियों में इस क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई है, जिसमें समुद्री डकैती, तस्करी और समुद्री आतंकवाद जैसी चुनौतियों का सामना करना प्रमुख है। इस संदर्भ में, हिन्द महासागर क्षेत्र भारत की विदेश नीति और सुरक्षा चिंताओं का मुख्य केंद्र है [2]।

श्रीलंका, जो हिन्द महासागर क्षेत्र के केंद्र में स्थित है, भारत के लिए विशेष महत्व रखता है। श्रीलंका का भू-स्थानिक स्थान इसे एक प्रमुख समुद्री व्यापार केंद्र और सामरिक साझेदार बनाता है। कोलंबो और त्रिंकोमाली जैसे बंदरगाह न केवल क्षेत्रीय व्यापार के लिए, बल्कि भारत की ऊर्जा आपूर्ति और समुद्री सुरक्षा के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कोलंबो बंदरगाह, दक्षिण एशिया का सबसे व्यस्त ट्रांस-शिपमेंट हब है, और इसमें भारत के कुल समुद्री व्यापार का लगभग 70% योगदान है [3]। इस क्षेत्र में भारत और श्रीलंका के संबंध आर्थिक सहयोग और सामरिक साझेदारी पर आधारित हैं। दोनों देशों ने समुद्री सुरक्षा, व्यापार, और बुनियादी ढांचा विकास जैसे क्षेत्रों में सहयोग किया है। हालांकि, चीन की बढ़ती उपस्थिति, विशेष रूप से बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत श्रीलंका में निवेश, भारत के लिए एक प्रमुख भू-राजनीतिक चुनौती बन गई है।

यह शोध पत्र हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत-श्रीलंका संबंधों को आर्थिक और सामरिक दृष्टिकोण से गहराई से विश्लेषित करता है। इसका उद्देश्य इन संबंधों में निहित चुनौतियों और अवसरों को समझना और हिन्द महासागर क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने में उनके योगदान को उजागर करना है।

1. हिन्द महासागर क्षेत्र का सामरिक महत्व

हिन्द महासागर क्षेत्र (Indian Ocean Region, IOR) वैश्विक व्यापार और सामरिक स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र विश्व के समुद्री परिवहन का मुख्य केंद्र है और इसके भू-स्थानिक महत्व को समझने के लिए यहां होने वाली आर्थिक और सामरिक गतिविधियों का विश्लेषण आवश्यक है। हिन्द महासागर के माध्यम से विश्व के 80% तेल व्यापार और 50% से अधिक कंटेनर शिपमेंट का संचालन होता है। यह क्षेत्र एशिया, अफ्रीका, और यूरोप को आपस में जोड़ने वाले प्रमुख समुद्री मार्गों का हिस्सा है। मलक्का जलडमरूमध्य, होर्मुज जलडमरूमध्य, और बाब-ए-मंदेब इस क्षेत्र के प्रमुख मार्ग हैं, जो वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत, चीन, जापान, और अन्य एशियाई देशों की ऊर्जा आपूर्ति का बड़ा हिस्सा हिन्द महासागर के इन जलमार्गों पर निर्भर है [1]।

भारत, हिन्द महासागर क्षेत्र में एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में उभरा है। इस क्षेत्र में भारत के सामरिक हित उसके समुद्री व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, और तटीय सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। भारतीय नौसेना की सुरक्षा प्राथमिकताएं समुद्री आतंकवाद, डकैती, और तस्करी जैसी चुनौतियों का सामना करना हैं। इसके अलावा, हिन्द महासागर भारत के समुद्री पड़ोसियों के साथ सामरिक संबंधों को मजबूत करने का अवसर भी प्रदान करता है [2]।

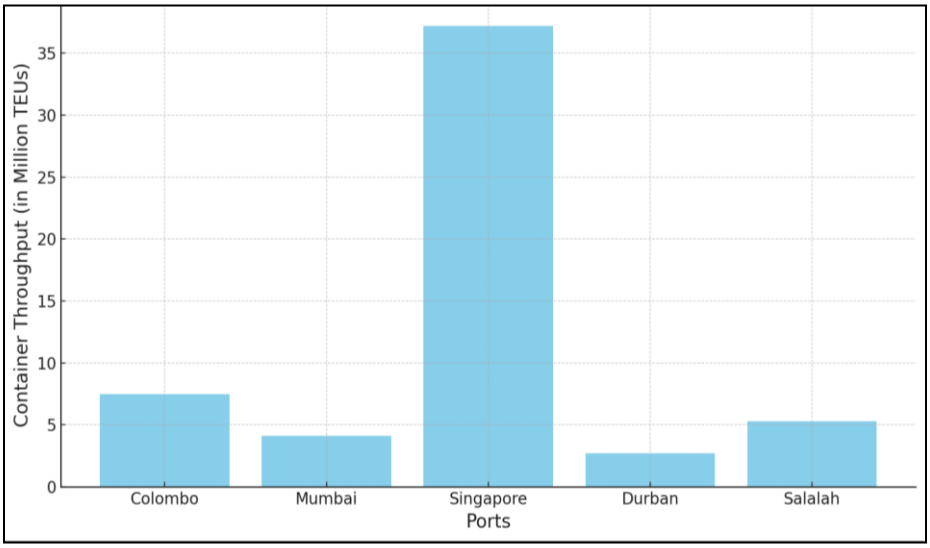

चित्र 1: हिन्द महासागर क्षेत्र के प्रमुख बंदरगाहों का बार चार्ट

श्रीलंका हिन्द महासागर के मध्य में स्थित है और अपने भू-स्थानिक महत्व के कारण भारत और अन्य देशों के लिए एक महत्वपूर्ण साझेदार है। इसका कोलंबो बंदरगाह दक्षिण एशिया का सबसे व्यस्त ट्रांस-शिपमेंट हब है, जिसमें 70% से अधिक भारतीय व्यापार का योगदान है। यह बंदरगाह भारत के पश्चिमी तट से मात्र 30 समुद्री मील की दूरी पर है, जो इसे भारत की सामरिक और आर्थिक सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। इसके अतिरिक्त, त्रिंकोमाली बंदरगाह, जो विश्व के सबसे गहरे प्राकृतिक बंदरगाहों में से एक है, सामरिक दृष्टिकोण से अत्यधिक मूल्यवान है। यह बंदरगाह भारत की ऊर्जा आपूर्ति और नौसैनिक अभियानों के लिए एक आदर्श स्थान है। भारत ने त्रिंकोमाली में तेल भंडारण और बंदरगाह के विकास में निवेश किया है, जिससे यह क्षेत्रीय स्थिरता के लिए एक प्रमुख केंद्र बन गया है [3]। हिन्द महासागर क्षेत्र की स्थिरता के लिए भारत और श्रीलंका का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। भारत की "सागर" (Security and Growth for All in the Region) पहल और श्रीलंका के साथ समुद्री सुरक्षा समझौते इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत और श्रीलंका के बीच सहयोग, विशेष रूप से समुद्री सुरक्षा, ट्रांस-शिपमेंट, और ऊर्जा आपूर्ति जैसे क्षेत्रों में, हिन्द महासागर को वैश्विक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि के लिए और अधिक प्रासंगिक बना सकता है।

2. भारत-श्रीलंका के आर्थिक संबंध

भारत श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जो दोनों देशों के बीच मजबूत आर्थिक परस्पर निर्भरता को दर्शाता है। 2022 में, द्विपक्षीय व्यापार $5.2 बिलियन तक पहुंच गया, जो आर्थिक सहयोग में स्थिर वृद्धि का संकेत है। भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता (ISFTA) इस वृद्धि का मुख्य आधार रहा है। ISFTA के लागू होने के बाद, श्रीलंका के भारत को निर्यात में 65% की वृद्धि हुई है। श्रीलंका के मुख्य निर्यात वस्त्र, चाय, और रबर उत्पाद हैं, जबकि भारत मुख्य रूप से पेट्रोलियम, वाहन, और औषधीय उत्पाद निर्यात करता है।

हालांकि, व्यापार असंतुलन एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। 2022 में, भारत ने श्रीलंका को $4.5 बिलियन का निर्यात किया, जबकि श्रीलंका से केवल $0.7 बिलियन का आयात किया गया। यह असंतुलन श्रीलंका के लिए अपनी निर्यात क्षमता बढ़ाने और अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता लाने की आवश्यकता को दर्शाता है।

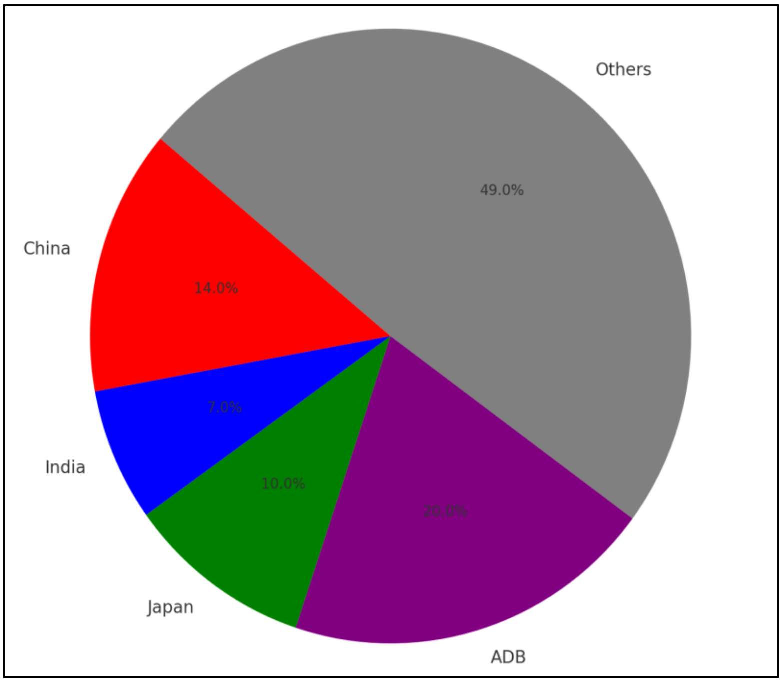

चित्र 2: श्रीलंका के बाहरी ऋण का पाई चार्ट (2022), जिसमें विभिन्न देशों के ऋण का वितरण दिखाया गया है।

श्रीलंका का बाहरी ऋण, जो 2022 में $50 बिलियन तक पहुंच गया, एक और बड़ी आर्थिक चुनौती है। इसमें से $7 बिलियन का ऋण चीन का है, जो श्रीलंका के लिए वित्तीय प्रबंधन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता को उजागर करता है।

भारत ने श्रीलंका में आधारभूत संरचना, नवीकरणीय ऊर्जा, और अन्य विकास परियोजनाओं में निवेश किया है, जो श्रीलंका की आर्थिक स्थिरता को समर्थन देने के प्रयास का हिस्सा हैं। भारत के ये निवेश दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को और मजबूत कर सकते हैं।

3. भू-राजनीतिक चुनौतियां: चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)

चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) ने श्रीलंका में बड़े पैमाने पर निवेश के माध्यम से हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया है। 2013 से 2021 के बीच, चीन ने श्रीलंका में $12 बिलियन का निवेश किया, जो मुख्य रूप से बंदरगाहों, राजमार्गों और ऊर्जा संयंत्रों पर केंद्रित था। इनमें हंबनटोटा बंदरगाह परियोजना सबसे प्रमुख है। यह बंदरगाह चीन की "स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स" रणनीति का हिस्सा माना जाता है, जिसका उद्देश्य हिन्द महासागर क्षेत्र में सामरिक प्रभुत्व स्थापित करना है। हंबनटोटा बंदरगाह को 2017 में श्रीलंका की ऋण अदायगी में असमर्थता के कारण 99 वर्षों के लिए चीन को पट्टे पर देना भारत के लिए एक बड़ी भू-राजनीतिक चुनौती बन गया।

हंबनटोटा बंदरगाह का पट्टा भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीतियों को सीधे प्रभावित करता है। यह बंदरगाह हिन्द महासागर में चीन की संभावित नौसैनिक उपस्थिति को बढ़ाने का संकेत है, जो भारत के सामरिक हितों और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार के निवेश और उनके संभावित परिणामों को "ऋण-फंदा कूटनीति" (Debt Trap Diplomacy) कहा जाता है, जिससे भारत और अन्य पड़ोसी देशों की सुरक्षा चिंताएं बढ़ गई हैं।

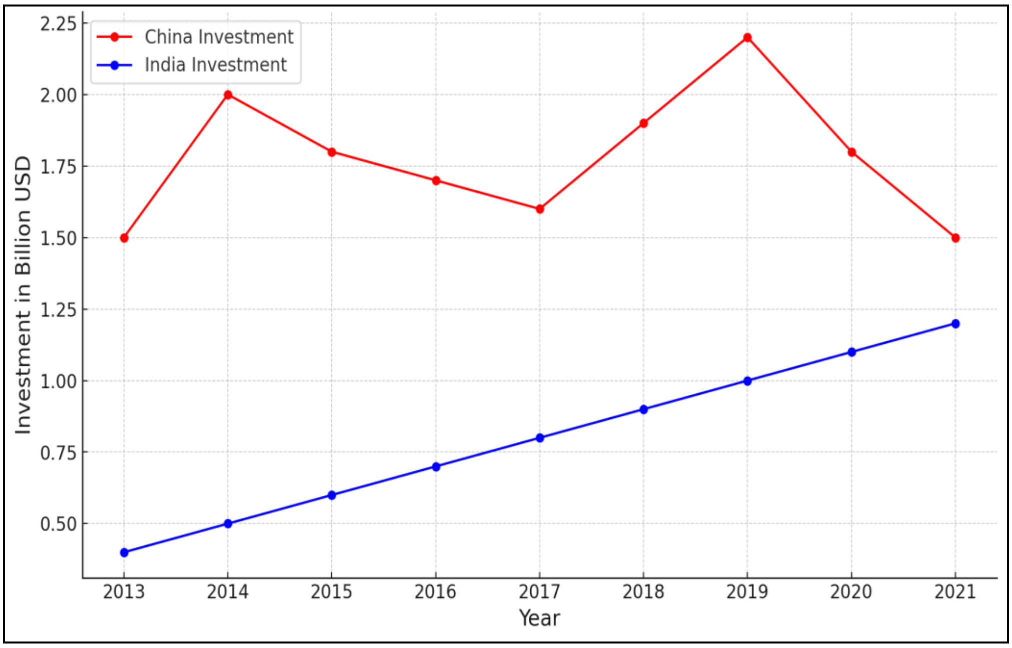

चित्र 3: यह चार्ट चीन और भारत के निवेश की तुलना दिखाता है, जो श्रीलंका में दोनों देशों की निवेश प्राथमिकताओं का आकलन करने में मदद करता है।

भारत ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भारत ने कोलंबो पोर्ट के ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ECT) परियोजना में निवेश किया, जो न केवल भारत-श्रीलंका व्यापारिक संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि सामरिक स्थिरता को भी बढ़ावा देता है। इसके अलावा, भारत ने अपनी "SAGAR" (Security and Growth for All in the Region) पहल के तहत समुद्री सुरक्षा और सहयोग को प्राथमिकता दी है। इस पहल के माध्यम से, भारत ने श्रीलंका और अन्य हिन्द महासागर क्षेत्र के देशों के साथ साझेदारी बढ़ाई है।

चीन और भारत के निवेश दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। चीन का निवेश बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे, जैसे बंदरगाहों और सड़कों, पर केंद्रित है। इसके विपरीत, भारत का दृष्टिकोण अधिक संतुलित और टिकाऊ है। भारत नवीकरणीय ऊर्जा, आवास, और स्थानीय विकास परियोजनाओं में निवेश कर रहा है, जो श्रीलंका के स्थानीय समुदायों और अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक लाभ प्रदान करता है। इन निवेशों की तुलना करते हुए देखा गया है कि 2013 से 2021 के बीच, चीन ने $12 बिलियन का निवेश किया, जबकि भारत का निवेश $6.6 बिलियन तक पहुंचा। हालांकि, भारत का निवेश छोटे पैमाने पर है, लेकिन यह टिकाऊ विकास और सामरिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दृष्टिकोण श्रीलंका के साथ भारत के दीर्घकालिक संबंधों को मजबूत करने में मदद कर सकता है।

चीन के बढ़ते प्रभाव और भारत की प्रतिक्रिया के बीच, यह स्पष्ट है कि हिन्द महासागर क्षेत्र में सामरिक स्थिरता बनाए रखने के लिए संतुलन आवश्यक है। श्रीलंका के साथ भारत का सहयोग इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने और क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करने में सहायक है।

4. सहयोग के अवसर

भारत और श्रीलंका के बीच नवीकरणीय ऊर्जा, ब्लू इकॉनमी, और क्षेत्रीय व्यापार संपर्कता जैसे क्षेत्रों में सहयोग की व्यापक संभावनाएं हैं। श्रीलंका ने 2030 तक अपनी 70% ऊर्जा को नवीकरणीय

स्रोतों से प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। भारत, जो सौर और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी है, इस लक्ष्य में श्रीलंका का एक प्रमुख साझेदार बन सकता है। 2015 से 2022 के बीच, भारत ने श्रीलंका में नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में $500 मिलियन का निवेश किया। इस निवेश ने श्रीलंका में सौर ऊर्जा पार्क और पवन ऊर्जा परियोजनाओं को साकार करने में योगदान दिया है। ब्लू इकॉनमी के अंतर्गत टिकाऊ मत्स्य पालन, समुद्री संसाधन प्रबंधन, और इको-टूरिज्म जैसे क्षेत्रों में संयुक्त परियोजनाएं लाभकारी हो सकती हैं। भारतीय तट और श्रीलंकाई जल क्षेत्र में समुद्री संसाधनों के प्रबंधन के लिए सहयोग, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास दोनों को बढ़ावा देगा।

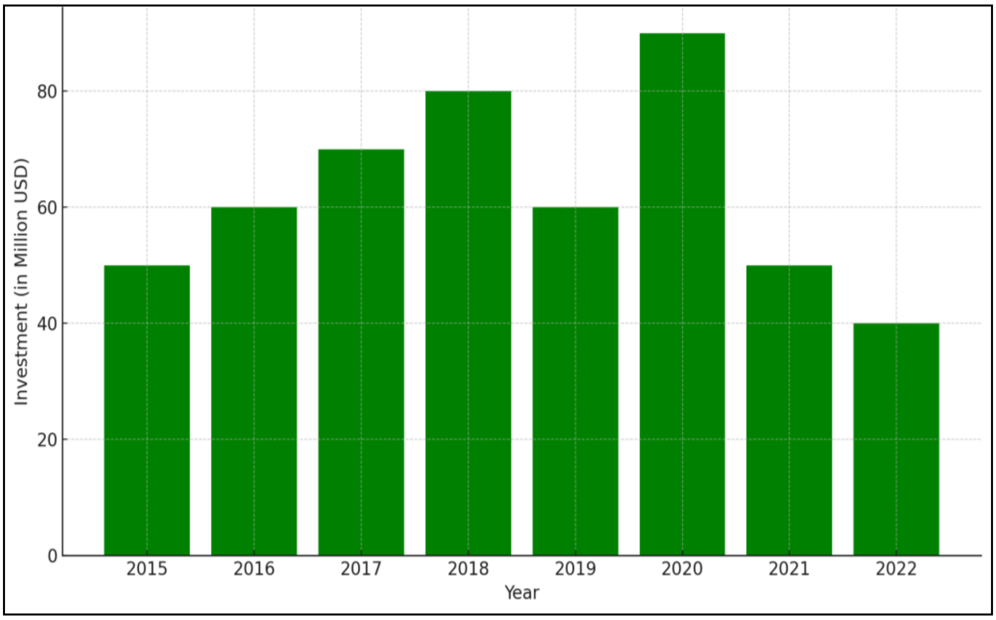

चित्र 4: श्रीलंका की नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में भारत का निवेश (2015-2022): यह बार चार्ट वार्षिक निवेश के रुझान को मिलियन USD में दर्शाता है, जो श्रीलंका के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के विकास में भारत के योगदान को प्रदर्शित करता है।

भारत और श्रीलंका के बीच व्यापार गलियारे, विशेष रूप से कोलंबो और त्रिंकोमाली बंदरगाहों के माध्यम से, दोनों देशों के लिए लाभकारी हो सकते हैं। श्रीलंका के बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और क्षेत्रीय व्यापार नेटवर्क में एकीकरण, आर्थिक स्थिरता और विकास को बढ़ावा देगा।

5. निष्कर्ष

भारत-श्रीलंका संबंध हिन्द महासागर क्षेत्र की स्थिरता और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दोनों देशों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और भू-राजनीतिक जुड़ाव उनके आर्थिक और सामरिक संबंधों को मजबूती प्रदान करता है। श्रीलंका, अपनी भू-स्थानिक स्थिति और सामरिक महत्व के कारण, भारत की समुद्री सुरक्षा और व्यापारिक रणनीतियों का एक अभिन्न हिस्सा है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत श्रीलंका में बढ़ते निवेश ने भारत के लिए नई भू-राजनीतिक चुनौतियां खड़ी की हैं। हंबनटोटा बंदरगाह और अन्य परियोजनाओं पर चीन के नियंत्रण ने भारत को अपनी सामरिक नीतियों को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है। इसके जवाब में, भारत ने श्रीलंका के साथ व्यापार, बुनियादी ढांचे, और समुद्री सुरक्षा में सहयोग बढ़ाया है। विशेष रूप से "सागर" (Security and Growth for All in the Region) पहल और

कोलंबो पोर्ट टर्मिनल परियोजनाओं में भारत की भागीदारी ने इस क्षेत्र में उसकी उपस्थिति को मजबूत किया है।

आर्थिक दृष्टि से, भारत-श्रीलंका के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि हुई है, लेकिन व्यापार असंतुलन और श्रीलंका के बाहरी ऋण जैसे मुद्दे अब भी चिंता का विषय हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए, दोनों देशों को नवीकरणीय ऊर्जा, ब्लू इकॉनमी, और क्षेत्रीय व्यापार संपर्कता में सहयोग के अवसरों का उपयोग करना होगा। भविष्य में, बहुपक्षीय मंचों जैसे BIMSTEC और IORA में भारत और श्रीलंका की सक्रिय भागीदारी इस क्षेत्र की स्थिरता और विकास में नए आयाम जोड़ सकती है। इन मंचों के माध्यम से, दोनों देश हिन्द महासागर क्षेत्र को एक शांति और समृद्धि का केंद्र बनाने में योगदान कर सकते हैं। भारत और श्रीलंका का यह सहयोग न केवल उनके द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करेगा, बल्कि हिन्द महासागर क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने में भी मदद करेगा।

संदर्भ

1. एम. मलिक, "हिंद महासागर में भारत की समुद्री रणनीति", एशियन स्ट्रैटेजिक स्टडीज, खंड 12, अंक 4, पृष्ठ 78-89, 2022।
2. यूएनसीटीएडी, "वैश्विक समुद्री व्यापार और हिंद महासागर का महत्व", संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट, जिनेवा, 2022।
3. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, "वार्षिक रिपोर्ट 2023", नई दिल्ली, 2023।
4. आर. बी. मोहन, "भारत-श्रीलंका आर्थिक साझेदारी", साउथ एशिया क्वार्टरली, खंड 14, अंक 2, पृष्ठ 101-115, 2022।
5. ए. गोपालकृष्णन, "ISFTA का द्विपक्षीय व्यापार पर प्रभाव", जर्नल ऑफ ट्रेड स्टडीज, खंड 8, अंक 3, पृष्ठ 34-49, 2021।
6. एस. वर्मा, "दक्षिण एशिया में व्यापार असंतुलन", ग्लोबल पॉलिसी रिव्यू, खंड 19, अंक 1, पृष्ठ 88-99, 2022।
7. एशियाई विकास बैंक, "श्रीलंका का ऋण और आर्थिक दृष्टिकोण", एडीबी रिपोर्ट, 2023।
8. के. सुरी, "हिंद महासागर में चीन के सामरिक निवेश", डिफेंस जर्नल, खंड 18, अंक 2, पृष्ठ 50-65, 2022।
9. एस. वर्मा, "दक्षिण एशिया में बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का विश्लेषण", ग्लोबल पॉलिसी रिव्यू, खंड 20, अंक 1, पृष्ठ 78-90, 2022।
10. पी. शर्मा, "भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति," स्ट्रैटेजिक जर्नल ऑफ साउथ एशिया, खंड 16, अंक 3, पृष्ठ 110-125, 2023।
11. श्रीलंका विद्युत मंत्रालय, "2030 के लिए नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य," कोलंबो, 2022।
12. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, "दक्षिण एशिया में ब्लू इकॉनमी पहलें", यूएनईपी रिपोर्ट, नैरोबी, 2023।
13. आर. गुप्ता, "श्रीलंका में भारत के नवीकरणीय ऊर्जा निवेश", ऊर्जा और पर्यावरण अध्ययन जर्नल, खंड 9, अंक 2, पृष्ठ 23-37, 2022।
14. के. राव, "हिंद महासागर क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग", IORA बुलेटिन, खंड 7, अंक 4, पृष्ठ 45-58, 2023।